टिप्पणी

26

परम्परागत माध्यमों के प्रकार

आपने सीखा कि परम्परागत माध्यम संचार के अत्यन्त उपयोगी रूप हैं। जैसा हमने देखा कि परम्परागत माध्यम विभिन्न प्रकार के होते हैं तथा भारत के विभिन्न भागों में व्यवहार में हैं। इसके अनेक रूप अभी भी प्रचलन में हैं, उनका स्वरूप तथा उनकी विषयवस्तु भले ही बदल गयी हो। उनको आधुनिक समय की आवश्यकता के अनुरूप फिर से विकसित किया गया है। ऐसे अनेक रूप मौजूद हैं जो हमारे रोजाना की दिनचर्या में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इस अध्याय में आप परम्परागत माध्यम के विभिन्न प्रकार या रूप, उनकी संरचना तथा भारतीय समाज में उनकी उपयोगिता का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के उपरांत आप निम्नांकित करने में सक्षम हो सकेंगेः–

- परम्परागत माध्यम के विभिन्न रूपों को सूचीबद्ध करना;
- विभिन्न परम्परागत माध्यमों के स्वरूप तथा संरचना की व्याख्या;
- समाज में इन माध्यमों की उपयोगिता का वर्णन।

26.1 परम्परागत माध्यमों के प्रकार

पिछले अध्याय में पढ़े हुए परम्परागत माध्यम के विभिन्न प्रकार क्या आपको याद हैं? आइए उनको सूचीबद्ध करें।

- नाटक
- नुक्कड़ नाटक

टिप्पणी

- कठपुतली
- नत्य
- कथा कहना
- गान
- संगीत
- चित्रकला
- प्रधान विचार तथा प्रतीक

26.2 नाटक

आपमें से अधिकांश ने 'नाटक' शब्द के विषय में अवश्य सुना होगा। क्या आपने अपने आसपास या किसी थियेटर में मंचित कोई नाटक देखा है?

नाटक परम्परागत माध्यम के सर्वाधिक लोकप्रिय रूपों में से एक है। आइए अब इसके बारे में ग्रामीण क्षेत्र के एक उदाहरण से समझें। खेतों में काम करने के बाद अकसर आप पाएँगे कि किसान अपने फुरसत के क्षणों का पूरा आनन्द उठाते हैं। इसके लिए वे कला के विभिन्न रूपों का उपयोग करते हैं। वे श्रंगार के लिए प्राक तिक रंगों का उपयोग करते हैं। प्रदर्शन का आधार उनके अपने सुख–दुख, चुनौतियों, दैनन्दिन जीवन, भविष्य के सपने तथा पौराणिक विश्वासों से बनता है। इसमें अच्छा लगे तो कोई भी दर्शक स्वयं भाग ले सकता है।

अब हम विभिन्न राज्यों में नाटक के कुछ रूपों का अध्ययन करेंगे।

तमाशा :- यदि आपको महाराष्ट्र में तमाशा देखने का अवसर मिलता है, तो आप उनके प्राचीन शासकों, मराठा नायकत्व, उनके विषम धरातल, संगीत आदि के बारे में जान पाएँगे।

तमाशा के दार्शनिक तथा सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष में तीन मूल तत्व समाहित हैंः मनोरंजन की परम्परा, अधिक गंभीर संप्रचारात्मक परम्परा तथा आस्थामूलक परम्परा। क्या आपने कभी तमाशा का प्रदर्शन देखा है?

नौटंकी :- 'नौटंकी' उत्तर भारत का नाट्य रूप है जो अपने दर्शकों का अकसर ग्राम्य तथा देशज कथाओं के माध्यम से मनोरंजन करता है। पूर्वआधुनिक भारत के देहाती समाज से निकला यह नाट्यरूप सजीव न त्य, नगाड़े की थाप तथा उच्च स्वर गायन से गुंजित होता है। अन्य भारतीय नाट्यरूपों के विपरीत नौटंकी का कथ्य भारतीय धार्मिक महाकाव्यों 'रामायण' तथा 'महाभारत' पर निर्भर नहीं है।

टिप्पणी

खयालः- ख्याल मुख्यतः राजस्थान में प्रदर्शित होता है। यह गीत–न त्य तथा नाटक का सम्मिलित रूप है। लोकनाट्य के इस रूप में संगीत एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यह केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं प्रदर्शित होता है बल्कि अभिनेताओं के मध्य संचार माध्यम के रूप में यह मुख्यतः प्रयुक्त होता है। इसमें चरित्रों तथा समूह दोनों द्वारा संगीत के उपयोग में महत्वपूर्ण विविधता मिलती है। नाटक के लिए उपयुक्त माहौल बनाने के लिए शुरुआत में वाद्य संगीत का भी उपयोग होता है।

26.3 नुक्कड़ नाटक

प्रदर्शन के इस रूप ने अपनी तकनीकों को भारत में पारम्परिक नाट्यरूपों से प्राप्त किया है। यह किसी भी नुक्कड़, गली या बाजार में प्रदर्शित किए जाते हैं।

चित्र 26.1: नुक्कड़ नाटक प्रदर्शन

इस स्थिति में दर्शक तथा अभिनेता एक ही स्तर पर होते हैं तथा यह स्थिति स्पष्ट होती है कि अभिनेता तथा दर्शक अलग नहीं हैं। इससे अभिनेता तथा दर्शक के बीच अन्तरंगता स्थापित करने में मदद मिलती है। दर्शक से नजदीकी द ष्टि संपर्क नुक्कड़ नाटक का एक महत्वपूर्ण तत्व होता है जिससे दर्शक नाटक की गति के साथ जुड़ा रहता है। यहाँ तक कि चारों ओर से दर्शकों से घिरा एक अभिनेता भी दर्शकों की गरूड़ द ष्टि में रहता है। इस तरह संयुक्त रूप से वे एक–दूसरे से जुड़ाव तथा उत्तरदायित्व का भाव प्रदर्शित करते हैं। कई बार दर्शकों को भी समूहगान हेतु आमंत्रित किया जाता है।

नुक्कड़ नाटक का मुख्य उद्देश्य किसी मुद्दे पर दर्शक को तत्काल आवश्यक सक्रियता हेतु उत्प्रेरित करना है। भारत में रास्ते के किनारे, गलियाँ, ग्रामीण बाजार,

खुले मैदान, मेला स्थल, कंट्रीयार्ड तथा अन्य सार्वजनिक स्थल नुक्कड़ नाटक प्रदर्शन के आदर्श स्थान रहे हैं।

भारत में बहुत बड़ी संख्या में नुक्कड़ नाटक सामाजिक–राजनैतिक मुद्दों पर आधारित हैं। इनमें से कुछ समसामयिक मुद्दों पर आधारित होते हैं तथा अन्य सांप्रदायिकता, आतंकवाद, पुलिस अत्याचार, दहेज हत्या, दहेज प्रथा, जातीय असमानता, चुनाव, औद्योगिक तथा क षि शोषण, शराबखोरी, निरक्षरता, नशाखोरी तथा भ्रूण हत्या पर आधारित होते हैं।

भारत में जहाँ ऊँची निरक्षरता की दर है, गरीबी, भाषा तथा बोली की विविधता है, इस तरह का बहुमुखी सर्वस्वीकार्य, सस्ता तथा गतिशील नाट्य रूप और भी प्रांसगिक तथा महत्वपूर्ण हो जाता है। क्या आपको पता है कि नुक्कड़ नाटक को गतिशील माध्यम क्यों कहा जाता है?

नुक्कड़ नाटक का गतिशील रूप इसे उन लोगों तक पहुँचाता है जो सामान्यतः प्रेक्षाग ह तक नहीं जाते। यह उन दर्शकों के अनुरूप है जिन तक यह पहुँचना चाहता है तथा जो कमजोर तबके से हैं जिनके लिए प्रेक्षाग ह जाकर नाटक देखना एक विलासिता है। प्रकाश, साजो–सामान, पोशाक तथा साज–श ंगार की पूर्णतया अनुपस्थिति इसे और भी लोचपूर्ण बनाती है। सफदर हाशमी, उत्पल दत्त, शीला भाटिया, हबीब तनवीर, शंभू मित्रा, बिजॉन भट्टाचार्य आदि नुक्कड़ नाटक के कुछ सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में से हैं।

नुक्कड़ नाटक कलाकार समाज में सकारात्मक घरेलू व्यवहार के प्रसार हेतु प्रयासरत हैं। उदाहरण के लिए पंजाब में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से गुरशरन सिंह समझ, धैर्य तथा सहनशीलता का संदेश प्रसारित कर रहे हैं। वह गलियों में जाकर नाटक का उपयोग लोगों को उनके मौलिक तथा राजनैतिक अधिकारों के बारे में जागरूक करने के लिए करते हैं। अस्सी के दशक में जब पंजाब उग्रवाद की आग में झुलस रहा था गुरशरन सिंह ने पंजाब की गलियों में अपने कलात्मक नुक्कड़ नाटक 'बाबा बोलदा है,' 'साधारण लोग', 'मैं उग्रवादी नहीं हूँ' आदि का प्रदर्शन किया।

विश्व के ख्यातिनाम नुक्कड़ नाट्यकर्मी सफदर हशमी के लिए यह कलारूप मूलतः राजनैतिक विरोध का मंच था। इसका काम लोगों को उत्प्रेरित करना तथा उन संगठनों के पीछे उन्हें लामबंद करना है जो सामाजिक परिवर्तन के लिए संघर्षरत हैं। अपने नाट्य समूह 'जन नाट्य मंच' के साथ उन्होने 'मशीन', 'हत्यारे', 'डीटीसी की धाँधली', 'औरत' तथा 'गाँव से शहर तक' का प्रदर्शन किया।

अभी तक आपने कितने नुक्कड़ नाटक देखे हैं? क्या इसकी तुलना उन टी.वी. कार्यक्रमों से की जा सकती है जिसे आपने देखा है?निश्चित तौर पर टी.वी. काफी लोकप्रिय है तथा अनेक घरों में उपलब्ध है। लेकिन साथ ही साथ नुक्कड़ नाटक जैसे कलारूप भी सामुदायिक स्तर पर बड़े जनजुटाव में एक बदलाव देख रहे हैं।

टिप्पणी

भारत में नुक्कड़ नाटक समूहों के सदस्यों में राजनैतिक कारणों के प्रति प्रतिबद्धता उच्च स्तर की है। जब कोई बड़ा सामाजिक या राजनैतिक विषय उभरता है तो जनम, निशांत, चित्रा, शताबि, अम तसर स्कूल ड्रामा, चंडीगढ़ जन–संस्क ति मंच, इप्टा पटना, इप्टा पंजाब, तथा लिटिल थियेटर ग्रुप जैसे अधिकांश समूह सामने आते हैं। ये सरकार नियंत्रित जन माध्यमों से अलग वैकल्पिक व्याख्या तथा द ष्टिकोण प्रस्तुत करने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए भोपाल गैस त्रासदी के दिनों में आधिकारिक मीडिया जहाँ नुकसान के आँकड़ों में उलझा पड़ा था, नुक्कड़ नाटक समूहों ने त्रासदी की निरन्तर पड़ रही काली छाया तथा बहुराष्ट्रीय निगमों के शोषण पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। अतः अपनी भौतिक, भावनात्मक तथा कल्पनाशील विस्तारित क्षमताओं के साथ सक्रियता से जुड़ने की कूबत के चलते नुक्कड़ नाटक एक सशक्त सामाजिक तथा सांस्क तिक अभिव्यक्ति हो सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 26.1

1 सही विकल्प का चुनाव करें:–

i) 'तमाशा' प्रदर्शित होता है:–

(क) तमिलनाडु में

(ख) केरल में

(ग) प. बंगाल में

(छ) महाराष्ट्र में

ii) 'नौटंकी' लोकप्रिय है:–

(क) दक्षिण भारत में

(ख) पश्चिम भारत में

(ग) पूर्वी भारत में

(घ) उत्तर भारत में

iii) 'ख्याल' रूप है–

(क) न त्य का

(ख) संगीत का

(ग) लोक नाट्य का

(घ) नुक्कड़ नाटक का

iv) हबीब तनवीर लोकप्रिय नाम हैं:–

(क) तमाशा के

(ख) नौटंकी के

(ग) ख्याल के

(घ) नुक्कड़ नाटक के

v) नुक्कड़ नाटक इस नाम से भी जाना जाता है–

(क) खर्चीला माध्यम

(ख) जड़ित माध्यम

(ग) अप्रासंगिक माध्यम

(घ) गतिशील नाट्य माध्यम

कठपुतली:- क्या आपने कभी कठपुतलियों को देखा है या सोचा है कि ये क्या है?

पुतली शब्द को अंग्रेजी में Puppet कहते हैं जो फ्रेंच शब्द पॉपी (Popee) या लैटिन के 'प्यूपा' (Pupa) से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ 'गुड़िया' है। हिन्दी का 'पुतली' शब्द संस्कृत के 'पुत्रका', 'पुत्रिका', या 'पुट्टलिका' से व्युत्पन्न है जो मूल शब्द 'पुट्टा' से निकले हैं जो 'पुत्र' के समकक्ष है। यह प्राचीन भारतीय विचारों का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें माना जाता था कि पुतलियों में भी जान होती है।

कठपुतली नाट्य मनोरंजन का एक रूप है जो व्यावहारिक रूप से विश्व के हर भाग में पाए जाते हैं। कठपुतली नाट्य में पुतलियों के विभिन्न रूपों का प्रयोग कथा कहने के लिए किया जाता है। अब हम इनके बारे में और भी तथ्य प्राप्त करेंगे।

कठपुतलियाँ मुख्यतः चार प्रकार की होती हैं:–

- दस्ताना कठपुतली
- कठपुतली
- दंड कठपुतली
- छाया कठपुतली

टिप्पणी

दस्ताना कठपुतलियाँ :- दस्ताना कठपुतलियाँ मुख्यतः उड़ीसा, केरल तथा तमिलनाडु में पायी जाती हैं। कठपुतली प्रदर्शन इन्हें अपने हाथों पर पहन लेते हैं तथा उँगलियों की सहायता से उनके सिर तथा बाँहों को सक्रिय करते हैं। कथा के रूप में प्रदर्शक अपनी कहानी कहता है वहीं कठपुतलियाँ द श्यांकन उपस्थित करती हैं। थोड़ी सी मेहनत तथा कल्पनाशीलता से आप खुद भी अपनी हस्त कठपुतलियाँ बना सकते हैं।

दस्ताना कठपुतलियों को बाँह कठपुतली, हथेली कठपुतली, हस्त या हथेली कठपुतली भी कहा जाता है।

चित्र 26.2: दस्ताना कठपुतली

उड़ीसा में दस्ताना कठपुतली को कुंडहाई नाच कहा जाता है। केरल की दस्ताना कठपुतलियाँ ज्यादा आलंकारिक रंग–वैविध्ययुक्त तथा साज–श ंगार एवं पहनावे से कथकली कलाकारों का अनुकरण करती हैं। उनका प्रदर्शन पावा कूथू या पावा कथकली के नाम से जाना जाता है। इसकी कहानियाँ मुख्यतः राधा–क ष्ण तथा 'रामायण' पर आधारित होती हैं।

डोर कठपुतलियाँ:- डोर कठपुतली (या धागे से हिलने–डुलने वाली कठपुतली) बहु–जोड़ वाली डोर से बँधी रूप है जो डोर से नियंत्रित होती है।

चित्र 26.3: डोर कठपुतली

डोर कठपुतलियाँ राजस्थान, उड़ीसा, तमिलनाडु, उड़ीसा तथा कर्नाटक में प्रचलित हैं। इसमें कठपुतली प्रदर्शन के दक्षतापूर्ण कौशल की निर्णायक भूमिका होती है। क्या आपने कभी डोर कठपुतली देखी है?

उदाहरण:

- राजस्थान के कठपुतली प्रदर्शन
- उड़ीसा की साखी कुंडेई
- आसाम का पुतलानाच
- महाराष्ट्र का मालासुतरी भौल्या

टिप्पणी

- तमिलनाडु का बोमलट्टम
- कर्नाटक का गोम्बेयाट्टा

दंड कठपुतलियाँ :- दंड कठपुतलियाँ अधिक बड़ी होती हैं जो दस्ताना कठपुतली का विस्तार रूप हैं।

यह बाँस के भारी डंडों पर स्थिर होती हैं जो कठपुतली प्रदर्शक की बाँहों से बँधी होती है। यह त्रिआयामी गत्यात्मक कठपुतलियाँ है जो दंडों की सहायता से प्रस्तुत की जाती हैं।

चित्र 26.4: दण्ड कठपुतली

बंगाल के पारस्परिक दंड कठपुतली को पुतुलनाच कहते हैं।

कुछ अन्य उदाहरण निम्नांकित हैं:–

- बिहार का यमपुरी
- उड़ीसा का कथी कुंडेई

टिप्पणी

छाया कठपुतलियाँः- इस प्रकार में श्वेत–श्याम या रंगीन रूप में कठपुतलियों की छाया इस्तेमाल होती है। पारदर्शी सतह पर सामान्यतः चमड़े से बनी सपाट पुतलियाँ धीरे से टिकाई जाती हैं तथा पीछे से प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था होती है। इस प्रकार पुतली तथा दर्शक के बीच स्क्रीन बाधा का काम करती है तथा द श्य का प्रस्तुतीकरण विकसित करती है। अंधेरे में बैठे दर्शकों पर इसका नाटकीय प्रभाव होता है। भारत में यह स्क्रीन एक सामान्य शीट होती है जो वहनीय ढाँचे में व्यवस्थित होती है।

छाया पुतलियाँ मुख्यतः आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र तथा उड़ीसा में मिलती हैं।

इनके उदाहरणों में समाहित हैंः–

● कर्नाटक का ● तोगुलु गोम्बेयट्टा ● आंध्र प्रदेश का धोलु बोमालाटा

26.4 संगीत तथा न त्य

आप सबने संगीत के किसी न किसी रूप को अवश्य सुना होगा तथा मंच अथवा टेलीविजन पर न त्य की प्रस्तुति भी अवश्य देखी होगी। भारत में संगीत तथा न त्य शास्त्रीय कलाओं के प्राचीनतम रूपों में से हैं जिनकी सदियों से परम्परा रही है। यह परम्पराएँ सैद्धान्तिक रूप से समान हैं। इनके नाम अलग हैं तथा यह भिन्न–भिन्न शैलियों में प्रस्तुत की जाती हैं।

न त्यनाट्य में लय तथा गति प्रदान करता है एवम् दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है।

हम संभवतः दुनिया के एकमात्र देश हैं जहाँ संगीत कला के किसी भी अन्य रूप से बढ़कर लोगों के जीवन से संबद्ध है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि भारत में संगीत ने प्राचीनकाल से ही दैनन्दिन जीवन में निर्णायक भूमिका अदा की है। यह हमेशा से विवाह, त्यौहार तथा प्रत्येक छवियों व चरित्रों के उत्सवों से जुड़ा रहा है। कोई भी धार्मिक समारोह संगीत के बिना पूरा नहीं हो सकता।

हमारे यहाँ प्रक ति के ऋतुओं की लय का उत्सव मनाने के लिए गीत, किसानों तथा नाविकों में गीत, चरवाहों तथा ऊँटहारों के गीत मौजूद हैं। यहाँ तक कि गाँव और जंगलों के भी गीत मौजूद हैं। यह संगीत ही है भारत में मानवीय गतिविधियों की नब्ज में लय प्रदान करता है।

भारत की सांगीतिक संस्क ति का स्रोत जन की परम्परा में है।

भारत का परम्परागत संगीत लोगों की भावनाओं का सर्वाधिक स्वाभाविक प्रतिनिधित्व करता है। गीत जीवन के हर पहलू से जुड़े होते हैं, चाहे उत्सव हो, नये मौसम का

आरम्भ हो, विवाह हो, जन्म हो या यहाँ तक कि आम जीवन के क्रिया कलाप जैसे प्रेमपात्र को आकर्षित करना या प्रक ति की प्रशंसा हो। क्या आप ऐसे कुछ गीतों को याद कर सकते हैं जिन्हें आपने सुना है?

हम इसे कुछ उदाहरणों द्वारा समझेंगे।

उदाहरण

- पारम्परिक रागों पर आधारित मराठी भजन।
- मांड जो एक राजस्थानी लोकधुन है।
- गजल उर्दू काव्यरूप है जो गाया जाता है। वाकपटु 'शायरी' (कविता) मद्धिम मौशिकी (संगीत) तथा मधुर 'जज्बात' (भावनाएँ) मिल कर गजल बनती हैं। गजल में संगीत मद्धिम होता है तथा गानों के बोल दो या तीन बार दोहराए जाते हैं। गजल की पहली दो पंक्तियों को 'मिसरा' तथा 'अंतरा' कहते हैं।
- कव्वाली उच्च आलाप तथा तेजगति गायन शैली है जो तेरहवीं सदी में विकसित हुई है। उस समय भारत में सूफीवाद लोकप्रिय हो रहा था तथा सूफी संतों के रहस्यवादी व्याख्यानों से कव्वाली विकसित हुई। अजमेर (राजस्थान) के प्रसिद्ध सूफी संत गरीबनवाज ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के अनुयायियों ने कव्वाली के रूप में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को अंगीकार किया तथा सम द्ध किया। मूलरूप से रहस्यवादी संगीत से विकसित होने के बाद इसमें प्रेम आधारित विषयों का भी समावेश हुआ।

चित्र 26.5 कव्वाली

पाठगत प्रश्न 26.2:

1 निम्नांकित का मिलान करें:–

(i)	दस्ताना कठपुतली	(क)	उर्दू गजल
(ii)	दंड कठपुतली	(ख)	चमड़े से निर्मित पुतली
(iii)	गजल	(ग)	पापा कुथ्यू
(iv)	डोर कठपुतली	(घ)	पुतुलनाच
(v)	छाया कठपुतली	(च)	कठपुतली

26.5 परम्परागत प्रेरणा तथा प्रतीक

क्या आपने त्यौहारों के समय रंगीन चूर्ण से घरों के बाहर बनायी जाने वाली रंगोली के प्रतिरूप पर ध्यान दिया है? यह और कुछ नहीं बल्कि एक प्रतीक है हमारे दैनन्दिन जीवन का। घरों के बाहर बने यह सुन्दर प्रतिरूप विश्वास हैं जीवन सत्व के उठान, आसुरी शक्तियों को दूर करने तथा सुरक्षा प्रदान करने का। भारत में लोग बहुत सारे सरल तथा जटिल प्रतीकों की पूजा करते हैं। भारतीय उन प्रतीकों में विश्वास करते हैं जो पूरी दुनिया से अनूठे हैं, हालांकि उनमें कुछ समरूपता देखी जा सकती है। भारत में प्रतीक पौराणिक आख्यानों, धार्मिक विश्वासों, परम्पराओं तथा दर्शन से निकले हैं। भारत प्रेरणा तथा प्रतीकों का देश है जहाँ परम्परागत कलारूप, आकार तथा धार्मिक रेखांकन सदियों से प्रचलन में रहे हैं। इन कलारूपों में प्रतीक, तलमोटिफ, लोक भित्तिचित्र, पारम्परिक वस्त्र प्रतिरूप, पैकिंग सामग्री चित्रकला इत्यादि सम्मिलित हैं।

यह भी एक रोचक तथ्य है कि बहुत सारे आकार जो आज हम देखते हैं आदि मानव गतिविधियों से निकली हैं।

26.6 चित्रकला

आदि मानव शब्दों से अपरिचित था। लेकिन वह पूंछ एक सिर और चार पैर सहित जानवर या मानवीय आकार जिसमें गोल सिर तथा चार लकीरों से अभिव्यक्त हाथ तथा पैर बना सकता था।

इतिहास की विभिन्न कालावधि में विभिन्न विषयों पर चित्रकला की स्थापित परम्परा रही है। मुख्यतः यह विषय दैनिक उपयोग के अन्तरंग पहलू, फर्श तथा दीवारे रहे हैं तथा हर क ति में, हर चित्रकला किसी न किसी परम्परा से जुड़ी रही है।

चित्र 26.6 भित्तिचित्र

मध्य प्रदेश की पारम्परिक चित्रकला अभिव्यक्तियाँ, विशेषरूप से बुंदेलखंड, छत्तीसगढ़, गोंडवाना, निमाड़ तथा मालवा के भित्तिचित्र मानव की जीवन्त अभिव्यक्तियाँ हैं। यह क्षेत्र के सामाजिक–सांस्क तिक परिवेश से गहराई से जुड़ी हैं। यह केवल सजावट मात्र नहीं हैं बल्कि साथ ही धार्मिक विश्वासों की भी अभिव्यक्ति हैं।

अब हम कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे।

- बुंदेलखंड में चित्रकला का काम चितेरा नाम से जाने जाने वाले व्यावसायिक चित्रकार करते हैं।

- छत्तीसगढ़ की चित्रकला में गीली मिट्टी के लेप का आधार के रूप में उपयोग होता है। इनके ऊपर उँगलियों से रेखांकन किया जाता है जिसे लिपाई कहते हैं। रजवार समुदाय की महिलाएँ लिपाई कला में सिद्धहस्त होती हैं। दूसरी ओर पांडो तथा सतनामी समुदाय रेखांकन प्रतिरूपों को कपड़े की बुनाई में उकेरते हैं। छत्तीसगढ़ गोदना कला का भी गढ़ है जिसे बादी समुदाय की महिलाएँ बनाती हैं। यह गोदना कला जटिल तथा सुंदर होती है तथा इनमें सुधार कर के डिजाइनर छापों के रूप में प्रयोग की पूरी संभावना है।

- मध्य प्रदेश के भील तथा भिलाला जनजातियों द्वारा पौराणिक आख्यानों पर आधारित चित्रकला को **पिथोरा** कहा जाता है। चमकीले, अनेक रंगों में हाथी, घोड़े, पक्षी, भगवान, मनुष्य तथा आम जीवन से जुड़े विविध प्रसंग अंकित किए जाते हैं।

- गोंडवाना क्षेत्र में गोंड तथा प्रधान जनजातियों की अद्वितीय कलात्मक द ष्टि ने लोगों को प्रभावित किया है। उनकी कला की प्रशंसा जापान, फ्रांस, आस्ट्रेलिया तथा अन्य देशों में उनके चित्रों की प्रदर्शनी में हुई है।

- मध्य प्रदेश के मालवा, निमाड़ तथा तंवरगढ़ क्षेत्र अपनी मुंडाना तथा भूतल चित्रकला परम्परा के लिए जाने जाते हैं। लाल मिट्टी तथा गाय के गोबर का मिश्रण भूतल पर लेपन हेतु आधार सामग्री के रूप में प्रयुक्त होता है। इस पर सफेद रंग से चित्र उकेरे जाते हैं। मोर, बिल्ली, शेर, गूजरी, बावरी, स्वास्तिक तथा चौक इस शैली के कुछ मोटिफ हैं।

26.7 कथा कहना

एक भारतीय कहावत के अनुसार– मुझे कोई तथ्य सुनाइए और मैं उसे याद कर लूँगा। मुझे एक सत्य बताइए और मैं उस पर विश्वास करूँगा। लेकिन आप मुझे एक कहानी सुनाइए वह हमेशा मेरे दिल में रहेगी। क्या आपको भी कहानी सुनना पसंद नहीं है।

लेकिन कहानी होती क्या है? एक कहानी हमें मानवीयता से जोड़ती है। वह अतीत वर्तमान तथा भविष्य को मिलाती है तथा उसकी शिक्षाओं से हमारे क्रिया–कलापों के संभव पूर्वानुमान का भान होता है। कथा कहना क्या है? 'कहना' में श्रोता तथा कथा कहने वाले के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। इसमें कथा कहने वाले को प्रत्यक्ष रूप से कहानी प्रस्तुत करने की सुविधा होती है।

हमारे यहाँ 'पंचतंत्र' तथा 'रामायण' एवं 'महाभारत' की कथाएँ मौजूद हैं। इनके पात्र तथा नायक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक शब्दों द्वारा हस्तांतरित होते हैं। यह बच्चों को उत्प्रेरित करने का सशक्त माध्यम हैं।

पाठगत प्रश्न 26.3

1. उपयुक्त शब्दों का चुनाव कर रिक्त स्थान की पूर्ति करें:–

   i) प्रतीक तथा प्रेरणा_____कला रूप के उदाहरण हैं।

   ii) व्यावसायिक चित्रकार जो बुंदेलखंड चित्रकारी करते हैं, _____कहलाते हैं।

   iii) छ त्तीसगढ़ _____समुदाय की महिलाएँ_____ की विशेषज्ञ होती हैं।

   iv) गोंडवाना चित्रकला_____तथा_____जनजातियों द्वारा तैयार की जाती है।

   v) _____लोकप्रिय भारतीय कथा है जो कई पीढ़ियों से हस्तांतरित हो रही हैं।

टिप्पणी

26.8 आपने क्या सीखा

→ नाटक

- तमाशा
- नौटंकी
- ख्याल

नुक्कड़ नाटक

कठपुतली

- दस्ताना कठपुतली
- दंड कठपुतली
- डोर कठपुतली
- छाया कठपुतली

संगीत तथा न त्य

- भजन
- लोकगीत
- गज़ल
- कव्वाली

परम्परागत प्रेरणा

- रंगोली
- लोक भित्तिचित्र
- वस्त्रसज्जा प्रतिरूप
- भूतल मोटिफ
- सूचीपत्र चित्रकला

चित्रकला

- लिपाई

टिप्पणी

- गोदना
- पिथोरा चित्रकला
- मंडाना भित्ति तथा भूतल चित्रकला

→ कथा कहना

- पंचतंत्र
- रामायण
- महाभारत

26.9 पाठान्त प्रश्न

1 किस तरह परम्परागत माध्यम के विविध रूप संचार में सहयोगी हैं–चर्चा करें।

2 कठपुतली के विभिन्न प्रकार की सोदाहरण व्याख्या करें।

3 निम्नांकित पर संक्षिप्त टिप्पणी दें–

i) परम्परागत प्रतीक तथा मोटिफ ii) चित्रकला iii) कथा कहना

26.10 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1 1 i) घ ii) घ iii) ग iv) घ v) घ

26.2 1 i) ग ii) घ iii) क iv) च v) ख

26.3 1. i) परम्परागत

ii) चितेरा

iii) रजवार, लिपाई

iv) गोंड, प्रधान

v) पंचतंत्र